मूल्यांकन का अभिप्राय
(MEANING OF EVALUATION)

शिक्षण के पश्चात् शिक्षण की सफलता को ज्ञात करने के लिए परीक्षाओं का आयोजन किया जाता रहा है। वर्तमान में प्रश्न के माध्यम से छात्रों के ज्ञान का पता लगाने की परम्परा रही है। छात्र के अंक ही शिक्षण सफलता अर्थात् किसी छात्र ने कितना सीखा है, के प्रतीक हैं।

बदलते हुए शैक्षिक परिवेश में परीक्षा की विचारधारा भी परिवर्तित हो रही है। शिक्षा में मूल्यांकन एक नवीन विचारधारा है। मूल्यांकन बालक के व्यवहार में परिवर्तन को मापने की प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विषय-वस्तु की उपयोगिता के विषय में निर्णय किया जाता है। **क्विलिन तथा हन्ना** के अनुसार—

"मूल्यांकन छात्रों की प्रगति के बारे में प्रमाण या उनमें व्यवहार परिवर्तन इकट्ठे करने तथा अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।"

"Evaluation is a process of gathering and interpreting evidences or changes in the behaviour of the students as they progress through schools."

—Qulin & Hanna

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् पुस्तिका मूल्यांकन का प्रत्यय (Concept of Evaluation) के अनुसार, मूल्यांकन प्रक्रिया में निम्न तीन बिन्दुओं पर विचार किया जाता है—

1. उद्देश्य की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है ?
2. कक्षा में दिये जाने वाले सीखने के अनुभव कितने प्रभावोत्पादक रहे हैं ?
3. शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति कितने अच्छे ढंग से सम्पन्न हुई है ?

शैक्षणिक उद्देश्य, सीखने के अनुभव तथा व्यवहार परिवर्तन, मूल्यांकन प्रक्रिया के विभिन्न अंग हैं तथा मूल्यांकन प्रक्रिया से जुड़े हैं। मूल्यांकन की जटिल प्रक्रिया का स्पष्टीकरण अग्र रेखाचित्र से स्पष्ट होता है :

Scanned with CamScanner

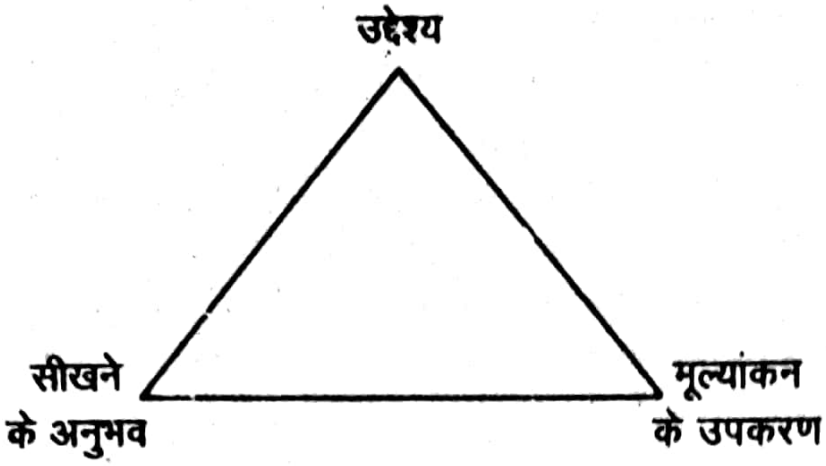

शिक्षण में हम पहले से निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सीखने के अनुभवों को निश्चित करते हैं। अब यह पता लगाने के लिए प्रदान किये गये सीखने में अनुभव कितने प्रभावशाली रहे अथवा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है, का मापन हम विभिन्न उपकरणों की सहायता से करते हैं जो कि वास्तव में शैक्षणिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बालक को दिए गए सीखने के अनुभव द्वारा हुए व्यवहार परिवर्तन का मापन करते हैं।

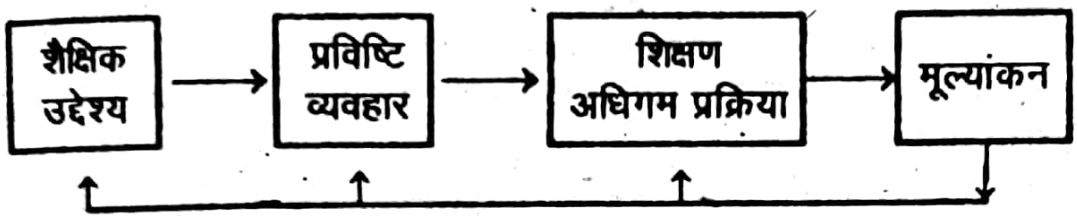

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राप्य उद्देश्य, सीखने के अनुभव तथा मूल्यांकन में एक विशेष सम्बन्ध है, वह सम्बन्ध यह है कि यदि प्राप्य उद्देश्य शिक्षा का लक्ष्य है तो सीखने के अनुभव लक्ष्य प्राप्ति के साधन हैं और मूल्यांकन उसका सबूत है।

मूल्यांकन के कार्य

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग है और शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया में निम्न प्रमुख कार्य हैं—

1. पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का निश्चय करने के लिए।
2. शैक्षिक उद्देश्यों के चयन और उनका मूल्यांकन करना।
3. शैक्षिक उद्देश्य का स्पष्टीकरण।
4. शिक्षण प्रक्रिया में सुधार।
5. सीखने के प्रभावशाली अनुभवों का चयन।
6. निर्देशन में सुधार।
7. प्रभावशाली सीखने को प्रेरित करना।
8. शिक्षकों, शिक्षण विधियों, पाठ्य-वस्तु, पुस्तकों आदि की जाँच करना।

अधिगम की सफलता (उत्पाद) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर निर्भर करती है अतः मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के स्तर पर प्रारम्भ होना चाहिए जिससे कि समय, शक्ति तथा संसाधनों के अपव्यय को रोका जा सके। प्रक्रिया से सम्बन्धित मूल्यांकन को

Scanned with CamScanner

हम रचनात्मक मूल्यांकन तथा शैक्षणिक उत्पाद से सम्बन्धित मूल्यांकन को हम आकलित मूल्यांकन कहते हैं। रचनात्मक तथा आकलित मूल्यांकन एक-दूसरे के पूरक हैं क्योंकि उत्पाद शैक्षणिक प्रक्रिया का ही परिणाम है।

Scanned with CamScanner